कहानी

मुट्ठी भर गुलाल

मनीषा मंजरी

मार्च की गुनगुनी धूप कमरे को रौशन कर रही थी, पर बिस्तर पर लेटी मीरा अपने हीं अंधेरों में कैद थी. कुछ दिनों में होली थी, और मोहल्ले में होली के गीत गूँज रहे थे. कभी ये गाने उसके कमरे में भी गूंजते थे, और जब माँ कहती आवाज कम कर कितना शोर मचा कर रखा है, तो मीरा चिढ़कर कहती, 'अरे माँ, ये शोर थोड़े है, मैं तो बस होली का माहौल बना रही हूँ.'

बहुत पसंद थी, मीरा को होली. उसे सबके साथ रंगों का ये हुड़दंग बेहद भाता था. पर आज वही होली उसे चुभती थी, और ये गाने उसे परेशान करते थे. क्यों? क्योंकि अब सौरव उसके साथ नहीं था.

मीरा और सौरव बचपन के दोस्त थे, और कॉलेज तक पहुँचते हीं प्रेम के बंधन में बंध गए. मीरा की होली सौरव के रंगों के साथ हीं शुरू होती थी. हर होली की सुबह वह घंटों पहले उठकर रंगों की थाल सजाती और सौरव के आने का इंतज़ार करती. सौरव हमेशा सबसे पहले उसके चेहरे पर गुलाल लगाता और कहता,

तुम्हारे बिना मेरी होली अधूरी है.

और मीरा कहती कि, तुम्हारे बिना तो मेरी ज़िन्दगी अधूरी है.

पर पांच साल पहले सौरव उसे छोड़कर किसी और की दुनिया में जा बसा. बिना कोई स्पष्टीकरण दिए, बिना पीछे मुड़कर देखे. पर मीरा आज भी वहीं उस बंद दरवाजे पर टेक लगाए बैठी थी. जहां बस अन्धकार था, यादें थी और वो भी ऐसी यादें जो सिर्फ दर्द देती थी. इसलिए उसके जाने के बाद मीरा ने रंगों से रिश्ता तोड़ लिया था. उसे लगता था कि रंग केवल बाहरी नहीं होते, वे भीतर भी बसते हैं. और जब भीतर सब कुछ मर जाए, तो बाहर के रंग भी अर्थहीन हो जाते हैं.

मीरा के मन में अचानक से एक निर्णय उठा. उसने अपने मामा को फोन किया और कहा कि वो वृंदावन आ रही है. मीरा के मामा वृन्दावन में पोस्टल विभाग में नियुक्त थे. कई बार उन्होंने कहा था कि आओ कृष्णा की नगरी घूम लेना, पर मीरा हर बार कुछ ना कुछ बहाना कर देती. पर होली की ये गूंज इतनी गहरी थी कि मीरा कहीं दूर जाना चाहती थी. उसने सोचा शायद वृन्दावन में, जहाँ प्रेम को पूजा जाता है, वहाँ उसके टूटे हुए प्रेम को कोई परिभाषा मिल जाए.

वृन्दावन की गलियों में कदम रखते हीं उसे एक अलग हीं दुनिया का एहसास हुआ. हर तरफ राधे-राधे की गूंज थी. वहाँ की हवा में गुलाल और लोगों के चेहरों पर अनोखी शान्ति थी. उन्हें देख कर ऐसा लगता जैसे वो रंगों में नहीं भावनाओं से सराबोर हों. मीरा उस भीड़ से बच कर मंदिर की सीढ़ियों पर जा बैठी. उसकी आँखें विस्मृत होकर लोगों को निहार रही थीं.

आप होली नहीं खेलेंगी?

मीरा के सामने एक छोटी सी बच्ची मुस्कुरा रही थी. मीरा ने धीमे स्वर में कहा,

मेरे जीवन में अब कोई रंग हीं नहीं बचा.

उस मासूम बच्ची ने मुस्कुराते हुए कहा,

रंग कभी खत्म नहीं होते. हम ही उन्हें देखना बंद कर देते हैं.

यह कहकर वह आगे बढ़ गई, और मीरा वहीं बैठी रह गई, उसके शब्दों के साथ.

शाम को वो नदी तट गई. यमुना नदी शांत थी, जैसे बैठी हो, स्थिर होकर, और सुन रही हो सबकी कही-अनकही. सच ही तो है वो सदियों से सुन हीं तो रही है लोगों के दर्द, उनकी प्रार्थनाएँ, उनकी अधूरी कहानियाँ. वो खुद में खोयी थी, जब एक वृद्ध साधु उसके पास आकर बैठे और कहा, बहुत शोर है तेरे भीतर.

मीरा चौंकी, आपको कैसे पता?

साधु ने कहा, तेरी आँखें रंगों से भागती हैं, और दर्द से भरी हैं.

मीरा की आँखें भर आयीं और एकाएक वो बोल बैठी, जिसे मैंने सबसे ज्यादा चाहा, वो मुझे त्याग कर खामोशी में चला गया.

साधु ने शांत स्वर में कहा,

जिसने तुम्हें त्यागा, उसने तुम्हारा प्रेम नहीं छीना. प्रेम तो शाश्वत होता है, और वो आज भी तुम्हारे भीतर उपस्थित है.

लेकिन वह तो चला गया मीरा की आवाज़ काँप गई. साधु ने कहा, प्रेम किसी व्यक्ति से नहीं, आत्मा से जुड़ा होता है. व्यक्ति चला जाता है, लेकिन प्रेम नहीं. प्रेम स्वरुप बदलता है, प्रगाढ़ होता है पर नष्ट नहीं होता.

उनके शब्द यमुना की लहरों की तरह मीरा के भीतर उतर गए. अगली सुबह होली थी. वृन्दावन में हर तरफ गुलाल उड़ रहा था. लोग नाच-गा रहे थे. राधे नाम की धुन और प्रेम की बारिश से कोई अछूता नहीं था. मीरा भी उसी भीड़ में खड़ी थी, लेकिन तन्हा और अलग. तभी वो छोटी बच्ची फिर मीरा के सामने आयी. आज उसने बिना कुछ कहे, धीरे से मीरा के हाथ में गुलाल रख दिया.

मीरा ने गुलाल को देखा, उसके हाथ काँप रहे थे. यादों में एक बार फिर सौरव की तस्वीर उभर आयी और आंसू का कतरा छलक पड़ा. लेकिन इस बार उन आँसुओं में केवल दर्द नहीं था, कुछ और भी था.

शायद स्वीकार. शायद मुक्ति.

वो कुछ पल तक गुलाल को देखती रही और फिर उसने गुलाल हवा में उछाल दिया. वो गुलाल हवा में फैला और उसके चेहरे, बालों, अस्तित्व पर आकर ठहर गया. उस क्षण उसे महसूस हुआ कि उसके भीतर कुछ टूटकर बिखरा नहीं, बल्कि कुछ फिर से जन्म ले रहा है. भीड़ में कोई उसे नहीं जानता था, लेकिन लगा जैसे पूरा वृंदावन उसकी इस नई शुरुआत का साक्षी बन गया है.

मीरा के चेहरे पर मुस्कान उभर आई. शायद महीनों, या फिर वर्षों बाद. उसने महसूस किया कि प्रेम व्यक्ति में सीमित नहीं होता. ये प्रेम एक ऊर्जा है, जो हमें तोड़ती नहीं, बल्कि हमें फिर से गढ़ती है. सौरव चला गया था, लेकिन मीरा के प्रेम की ऊर्जा जीवित थी. और अब वह अपने प्रेम को किसी और के नाम नहीं, खुद के नाम जीना चाहती थी.

उसने आसमान की ओर देखा, जहां रंग ही रंग थे. और उसे लगा कि उसके भीतर भी रंग लौट आए हैं. वृंदावन ने उसे कोई चमत्कार नहीं दिया था. पर कभी-कभी, खुद से मिलना ही सबसे बड़ा चमत्कार होता है.

उस दिन, वर्षों बाद, मीरा ने होली खेली. किसी और के लिए नहीं. केवल अपने लिए.

क्लास by बड़े भाई

देर रात, नींद और बेचैनी

संदीप द्विवेदी
कवि/प्रेरक वक्ता/स्किल ट्रेनर

छोटे भाई, हम और आप अक्सर कभी न कभी इससे गुजरते होंगे यानि कि आधी रात आपकी नींद खुल गयी होगी, फिर आपको नींद नही आती होगी, घड़ी रात के दो बजा रही होगी और फिर शुरू होता होगा अनगिनत भयानक विचारों के आक्रमण का खेल. बताइए होता है या नही?

अरे मैं कोई डॉक्टर नही हूँ लेकिन यह मैंने झेला है, कभी कभी झेलता भी हूँ और यह भी जानता हूँ कि आप सब भी अक्सर इससे दो चार होते हैं. बस कोई इससे निबटने का तरीका ढूंढ लेता है, कोई उसके घेरे में फंसकर बेचैन हो उठता है. वो रात नींद खुलने से डरने लगता है. आइये आज इससे निबटने के तरीकों पर बात करते हैं.

छोटे भाई, हम सबके पास कुछ पाने का कुछ करने का एक सपना होता है लेकिन हमेशा ऐसा नही होता कि जो हमने लक्ष्य बनाया है उसको पाने के लिए हमारा हर प्रयास सफल ही हो. यही प्रयास जब सफल नही होते या किसी भी कारण से हम अपनी मनचाही दिशा में नही बढ़ पाते तो हमारे भीतर एक न कर पाने की वजह से उसके न जाने कितने नकारात्मक प्रभावों की कल्पना करने लगते हैं और चिंतित होने लगते है. जो अक्सर रात में अधिक होती है.

तो अब यह जान लेने के बाद तरीका यह है कि आप अपने आपको यह समझाएं कि सबकुछ इस दुनिया में आपके हिसाब से कभी नही हो सकता और यह बस आपकी नही सबकी कहानी है. जो आपको सब पाया हुआ लगता है उससे मिलेंगे तो पता चलेगा कि उसके भी बहुत से सपने अधूरे ही पड़े हैं. तो अपने आपको जब आप यह विश्वास दिला देते हैं तो यह फिजूल के विचार और बेचैनी अपने आप ही बंद हो जाती है क्योंकि आप संसार का कड़वा या मीठा जो भी कहें,सत्य समझ चुके हैं.

दूसरा तरीका यह है कि जब आपको यह हो तो कुछ करने लगिए, कोई लक्ष्य से जुड़ा काम या कोई संगीत या कोई कॉमेडी फिल्म देखने लग जाएं. मन और दिमाग में आ रहे अनगिनत डरावने विचारों से घबराइए नहीं. वो कुछ सच नहीं है,कुछ भी नहीं..

करके देखिएगा,यकीन मानिए, मेरा अजमाया हुआ है. कुछ समय में सब आपके नियंत्रण में होगा. सब अच्छा होगा. अगर यह तरीका आपके लिए कारगार साबित हो तो बताइयेगा.

याद रखिए, जीवन कुछ पाने न पाने से ज्यादा इसका हर क्षण आनंद में जीने से है जो किसी भी सफलता असफलता से प्रभावित नहीं होता.धन्यवाद.

नई हिन्दी जैसे नारे ज़्यादा दिनों तक टिकने वाले नहीं

आयोजन

लिटरेचर क्लब का महत्वपूर्ण आयोजन रहा सार्थक

भावेश कानूनगो

परम्परा से आया सरोकारी गम्भीर लेखन ही बचा रहेगा. कोई भी रचना लेखक, कवि की दृष्टि से बड़ी बनती है. उसे अपने व्यष्टि को समष्टि में बदलना पड़ता है. संवेदना, विचार, भाषा और अनुभव से ही कोई रचना बनती है.

यह बात ख्यात आलोचक, सम्पादक नलिन रंजन सिंह ने देवास में लिटरेचर क्लब के आयोजन %मिलिए हमारे अतिथि से% में बात करते हुए कही. नई हिन्दी इतनी ही अच्छी है तो फिर विनोद कुमार शुक्ल की पुरानी किताब को इतनी बड़ी रॉयल्टी कैसे दी गई, जबकि वे तो परम्परा से आए हुए पुरानी हिन्दी के लेखक हैं. उन्होंने उपन्यासकार सुनील चतुर्वेदी के %कालीचाट% उपन्यास के ज़रिए किसानों की बातों के 90 साल पुराने प्रेमचंद के गोदान को अब तक प्रासंगिक होने को दुर्भाग्यपूर्ण बताया. इसलिए कि समाज अब तक नहीं बदला, जबकि बदल जाना चाहिए था. सुधी श्रोताओं ने पूरी तन्मयता से नलिन जी की बातों को लगभग डेढ़ घण्टे से ज़्यादा समय तक सुना और सत्र के अंत में सवाल भी किए.

लिटरेचर क्लब देवास की ओर से मनीष शर्मा ने अतिथि परिचय के साथ कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की. वरिष्ठ कथाकार प्रकाश कान्त और प्रतिष्ठित उपन्यासकार सुनील चतुर्वेदी ने नलिन रंजन सिंह का स्वागत किया.

मनीष वैद्य ने बातचीत करते हुए कविता, कहानी, उपन्यास आदि से जुड़े सवाल किए, जिन पर नलिन रंजन सिंह ने अपनी नायाब शैली में जवाब दिए. बातचीत में श्रोता ऐसे डूबे कि वक़्त का पता ही नहीं चला. रश्मि शर्मा, बिंदु तिवारी, चयन कानूनगो और शांतनु बेहरे ने सवाल किए. हिमांशु कुमावत, भावेश कानूनगो तथा मंजू जैन ने आभार माना.

कविता

जो कह न सके तुमसे

राकेश धर द्विवेदी

जो कह न सके तुमसे
शब्दो में लिखा होगा
आँखों पे लिखी-बाते
आँखों ने पढा होगा
तस्वीर तेरी मैने
जो नयनो में बसाई है
नयनों से अश्रु जब निकले
तेरा रुप सजा होगा
मेरे दिल के पन्नों पर
तेरी प्रेम कहानी है
मैने जब पन्नों को पलटा
तेरा दिल भी धड़का होगा
मै इन प्रेम गीतों को
इस उम्मीद से गाता हूँ
कि कहीं दूर किसी कोने पर
तेरा दिल भी रोता होगा

कविता

होली-हमजोली

मीरा जैन

होली के हवाले से
रंगों के प्याले से
उठा हुड़दंग का तूफान
न कोई निर्धन
न कोई धनवान,
प्यार की बस्ती
रंगों की मस्ती
हर चेहरे पर छाई
गुलाल जी की हस्ती,
कोई भयातुर
कोई रंग लगाने को आतुर
पकड़ो- जकड़ो रंग लगाओ
यही इस पर्व का दस्तूर ,
चंहु ओर रंगों की कनात
मुचे-टुचे परिधानों से
टपक रही एकता की सौगात,
आज का दिन होता है खास
उटपटांग शब्द ही बिखरते
है हास परिहास ,
फिर भी
ना कोई पराया
सब लगते अपने
महसूस होता है
पूर्ण हो गए
समानता के सपने ,
रंग गुलाल के कर देना
खाली चाहे घड़े
लेकिन ध्यान रहे कभी
किसी के चेहरे का रंग न उड़े।

लघुकथा

रंग जो बचाएं कल

नील मणि

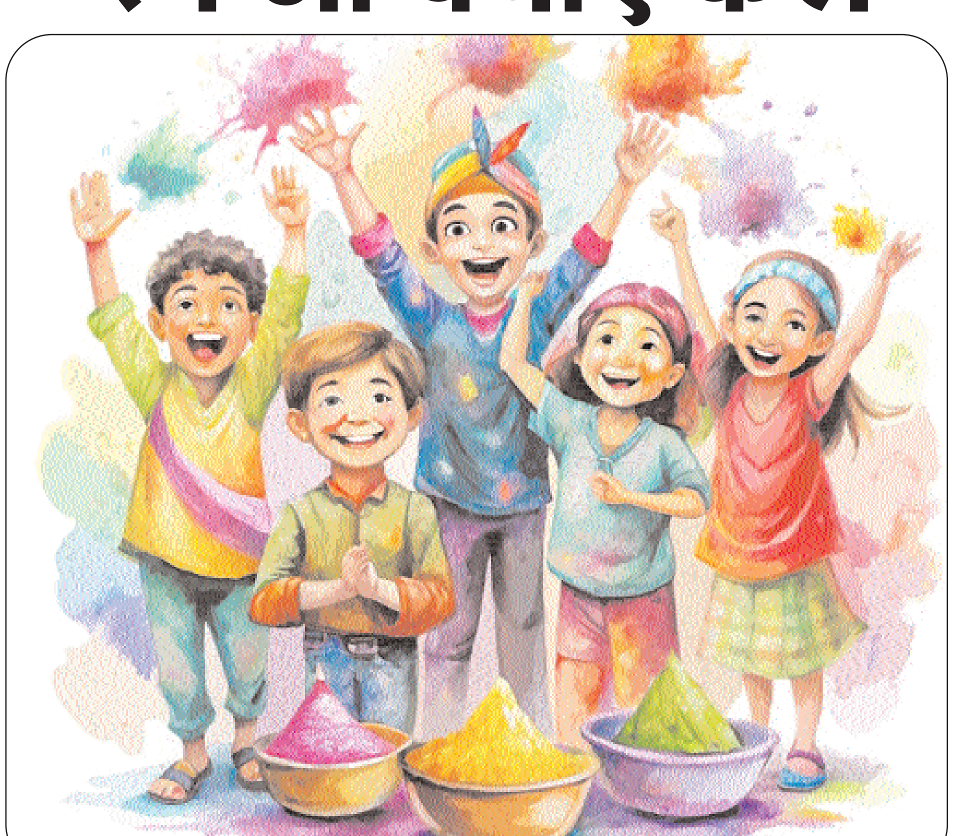

होली आने वाली थी. 15 साल का आरव और उसकी 14 साल की बहन सिया इस बार कुछ अलग करने को उत्साहित थे. दोस्तों के व्हाट्सऐप ग्रुप में चर्चा चल रही थी- इस बार बड़ी पानी वाली होली होगी!

आरव ने भी लिख दिया, सबसे बड़ी बाल्टी मैं लाऊँगा!

तभी दादी ने आँगन में सूखते पौधों की ओर इशारा किया.

बेटा, इस बार पानी थोड़ा कम है. पिछले हफ्ते टंकी भी आधी भर पाई थी.

आरव ने हँसते हुए कहा, दादी, होली साल में एक बार ही तो आती है!

दादी ने धीरे से जवाब दिया, और पानी? वह तो रोज़ नहीं मिलता कई जगह. बेटा जल जीवन है. दादी ने प्यार से क्यारी की सूखी मिट्टी दिखाकर कहा –

जहाँ पानी की कमी होती है वहाँ पौधों के साथ साथ त्यौहार भी फीके हो जाते हैं. कुछ जगहों पर तो लोग टैंकर से पानी खरीदते हैं. गांवों आदि में तो महिलाओं को घड़ों में दूर से पानी लाना पड़ता है अगर त्यौहार के बहाने हर घर इतना पानी बहाए तो क्या होगा?

उस रात सिया ने इंटरनेट पर खोजा और जाना – भारत के कई हिस्सों में पानी की कितनी कमी हैज जगह जगह पानी बचाने की अपील की जा रही है.

सिया ने आरव को दिखाया, सोचो, अगर हम इतना पानी खेल में बहाएँ, तो क्या यह सही होगा?

आरव चुप हो गया.

अगले दिन दोनों ने दोस्तों को बुलाया और कहा–

इस बार हमारी होली अलग होगी. पानी नहीं, फूल और सूखा गुलाल.

कुछ दोस्तों ने मज़ाक उड़ाया– अरे, होली का मज़ा ही क्या रहेगा?

आरव ने समझाया, मज़ा रंगों में है, पानी की बर्बादी में नहीं. अगर हर घर एक बाल्टी कम इस्तेमाल करे, तो सैकड़ों लीटर पानी बच सकता है.

सिया ने माँ की मदद से घर पर प्राकृतिक रंग बनाए– हल्दी से पीला, चुकंदर से गुलाबी और फूलों की खुशबूदार पंखुड़ियाँ से बने रंग.

होली के दिन उनकी छत पर संगीत बजा, सबने एक-दूसरे को हल्के से गुलाल लगाया, फूल उछाले, हँसी गूँजी.

कोई कीचड़ नहीं, कोई पानी की मार नहीं– सिर्फ रंग, प्यार और रिश्ते.

शाम को दादी ने कहा, आज तुम दोनों ने होली नहीं, भविष्य रंगा है.

आरव मुस्कुराया, अब हर साल ऐसी ही होली होगी.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी